Toppersnotes
Unleash the topper in you

RPSC

सहायक आचार्य

समाजशास्त्र

राजस्थान लोक सेवा आयोग, अजमेर

पेपर – 1 || भाग – 1

SIERRA INNOVATIONS

RPSC सहायक आचार्य पेपर – 1 (समाजशास्त्र)

क्र. सं.	अध्याय	पृष्ठ सं.
	मूल अवधारणाएँ	
1.	समाजशास्त्र का अर्थ, परिभाषा और विषय-वस्तु	1
2.	समाजशास्त्र का दायरा और प्रकृति	6
3.	समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण और ज्ञानोदय	12
4.	समाज की अवधारणा: परिभाषाएँ और विशेषताएँ	17
5.	संस्कृति: अर्थ, तत्व और प्रकार	22
6.	समुदाय: अर्थ, प्रकार और विशेषताएँ	27
7.	मानदंड और मूल्य: परिभाषाएँ और समाज में भूमिका	32
8.	संस्थाएँ: अर्थ, प्रकार और कार्य	37
9.	संघ और सामाजिक व्यवस्था	42
10.	सामाजिक समूह: अर्थ और वर्गीकरण	47
11.	स्थिति और भूमिका: परिभाषाएँ और गतिशीलता	52
12.	सामाजिक नियंत्रण: अर्थ और तंत्र	58
13.	सामाजिक नियंत्रण एजेंसियां	64
14.	सामाजिक नियंत्रण के सिद्धांत	73
15.	समाजीकरण: अर्थ और चरण	80
16.	समाजीकरण के सिद्धांत	87
17.	सामाजिक स्तरीकरण: अर्थ और रूप	94
18.	सामाजिक स्तरीकरण के सिद्धांत	102
19.	सामाजिक प्रक्रियाएँ: साहचर्य और विघटनकारी	109
20.	सामाजिक परिवर्तन, सामाजिक गतिशीलता और सामाजिक विचलन	117
21.	सामाजिक संपर्क: अर्थ और प्रकार	124

I UNIT

मूल अवधारणाएँ

समाजशास्त्र का अर्थ, परिभाषा और विषय-वस्तु

परिचय

"समाजशास्त्र का अर्थ, परिभाषा, विषय-वस्तु, क्षेत्र, प्रकृति और परिप्रेक्ष्य", ज्ञानोदय से इसके संबंध पर केंद्रित है। यह अध्याय इन तत्वों पर व्यापक रूप से चर्चा करता है, शास्त्रीय और समकालीन परिभाषाओं, समाजशास्त्र के उद्भव के ऐतिहासिक संदर्भ और भारतीय समाज (जैसे, जाति, नातेदारी, धर्म) के संबंध में इसके विषय-वस्तु को एकीकृत करता है।

समाजशास्त्र का अर्थ, परिभाषा और विषय-वस्तु

समाजशास्त्र का अर्थ

समाजशास्त्र, लैटिन शब्द *सोशियस* (साथी) और ग्रीक शब्द *लोगोस* (अध्ययन) से मिलकर बना है और इसका शाब्दिक अर्थ है समाज का अध्ययन। यह एक सामाजिक विज्ञान है जो मानव सामाजिक व्यवहार, संबंधों, संस्थाओं और संरचनाओं का व्यवस्थित रूप से परीक्षण करता है। समाज की सामान्य समझ के विपरीत, समाजशास्त्र सामाजिक घटनाओं के पैटर्न, कारणों और परिणामों को उजागर करने के लिए अनुभवजन्य विधियों, सैद्धांतिक ढाँचों और आलोचनात्मक विश्लेषण का उपयोग करता है।

- **प्रमुख विशेषताऐं** :
  - **वैज्ञानिक दृष्टिकोण** : समाजशास्त्र समाज का वस्तुनिष्ठ अध्ययन करने के लिए अवलोकन, सर्वेक्षण, प्रयोग और सांख्यिकीय विश्लेषण का उपयोग करता है।
  - **सामूहिकता पर ध्यान** : यह व्यक्तिगत कार्यों की अपेक्षा समूहों, समुदायों और संस्थाओं पर अधिक जोर देता है।
  - **प्रासंगिक विश्लेषण** : समाजशास्त्र ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और आर्थिक संदर्भों में सामाजिक घटनाओं की जांच करता है।
  - **भारत में अनुप्रयोग** : भारत में समाजशास्त्र जाति, जनजाति, परिवार और धर्म जैसी विविध सामाजिक संरचनाओं का अध्ययन करता है, तथा असमानता, आधुनिकीकरण और सामाजिक परिवर्तन जैसे मुद्दों को संबोधित करता है।
- **उदाहरण** : भारत में समाजशास्त्र इस बात की जांच करता है कि जाति राजनीतिक भागीदारी को किस प्रकार प्रभावित करती है, जैसा कि आरक्षण नीतियों और चुनावी व्यवहार के अध्ययन में देखा गया है।

समाजशास्त्र की परिभाषाएँ

समाजशास्त्र को शास्त्रीय और समकालीन समाजशास्त्रियों द्वारा परिभाषित किया गया है, जो इसके विकसित होते दायरे को दर्शाता है:

- **ऑगस्टे कॉम्टे (1798–1857)** :
  - "समाजशास्त्र प्राकृतिक और अपरिवर्तनीय नियमों के अधीन सामाजिक घटनाओं का विज्ञान है, जिसकी खोज ही जांच का विषय है।"
  - **संदर्भ** : कॉम्टे, "समाजशास्त्र के जनक" ने इस शब्द को गढ़ा और समाजशास्त्र को सामाजिक व्यवस्था और प्रगति का अध्ययन करने के लिए एक प्रत्यक्षवादी विज्ञान के रूप में देखा।
  - **प्रासंगिकता** : वैज्ञानिक जांच पर उनका जोर आधारभूत बना हुआ है, जिसका परीक्षण समाजशास्त्र की वैज्ञानिक प्रकृति पर आरपीएससी के प्रश्नों में किया गया है।
- **एमिल दुर्खीम (1858-1917)** :
  - “समाजशास्त्र सामाजिक संस्थाओं, उनकी उत्पत्ति और उनकी कार्यप्रणाली का विज्ञान है।”
  - **संदर्भ** : दुर्खीम ने सामाजिक तथ्यों (जैसे, मानदंड, मूल्य) पर ध्यान केंद्रित किया, क्योंकि ये बाहरी, बाध्यकारी शक्तियां व्यवहार को आकार देती हैं।
  - **प्रासंगिकता** : उनकी परिभाषा भारतीय संदर्भ में सामाजिक संस्थाओं (जैसे, परिवार, धर्म) पर प्रश्नों के लिए महत्वपूर्ण है।
- **मैक्स वेबर (1864-1920)** :
  - "समाजशास्त्र एक विज्ञान है जो सामाजिक क्रिया की व्याख्यात्मक समझ का प्रयास करता है ताकि उसके क्रम और प्रभावों की कारणात्मक व्याख्या तक पहुंचा जा सके।"
  - **संदर्भ** : वेबर ने सामाजिक कार्यों के पीछे व्यक्तिपरक अर्थों की व्याख्यात्मक समझ *पर जोर दिया।*
  - **प्रासंगिकता** : सामाजिक कार्रवाई पर वेबर का ध्यान व्यक्तिगत-एजेंसी बनाम संरचना बहस पर प्रश्नों के लिए महत्वपूर्ण है।

- **एंथनी गिडेंस (समकालीन)** :
    - "समाजशास्त्र मानव सामाजिक जीवन, समूहों और समाजों का अध्ययन है, जो इस बात पर केंद्रित है कि किस प्रकार सामाजिक संस्थाएं और व्यक्तिगत क्रियाएं एक-दूसरे को आकार देती हैं।"
    - **संदर्भ** : गिडेंस ने संरचना और एजेंसी के बीच परस्पर क्रिया पर प्रकाश डाला है, जो आधुनिक समाजशास्त्रीय बहसों के लिए प्रासंगिक है।
    - **प्रासंगिकता** : उनकी परिभाषा समकालीन सामाजिक मुद्दों (जैसे, वैश्वीकरण, डिजिटल समाज) पर आरपीएससी प्रश्नों के साथ संरेखित है।
- **भारतीय परिप्रेक्ष्य:** जी.एस.घुर्ये **:**
    - "भारत में समाजशास्त्र को सांस्कृतिक और ऐतिहासिक संदर्भों में निहित जाति, रिश्तेदारी और धर्म जैसी भारतीय सामाजिक संस्थाओं के अध्ययन पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए।"
    - **संदर्भ** : भारतीय समाजशास्त्र के अग्रणी घुर्ये ने समाजशास्त्र को मानवशास्त्र और इतिहास के साथ मिश्रित करते हुए इंडोलॉजी पर जोर दिया।
    - **प्रासंगिकता** : उनकी परिभाषा भारतीय सामाजिक संरचनाओं पर आरपीएससी प्रश्नों के लिए महत्वपूर्ण है।

समाजशास्त्र की विषय-वस्तु

समाजशास्त्र का विषय-वस्तु सामाजिक घटनाओं, संबंधों और संरचनाओं का अध्ययन है, जिसमें उनके स्वरूप, कारणों और परिणामों पर ध्यान केंद्रित किया जाता है। यह व्यापक, गतिशील और संदर्भ-विशिष्ट है, विशेष रूप से भारत के बहुलवादी समाज में।

अध्ययन के मुख्य क्षेत्र

- **सामाजिक संरचनाएँ** :
    - परिभाषा: सामाजिक संबंधों और संस्थाओं (जैसे, परिवार, जाति, अर्थव्यवस्था) के संगठित पैटर्न।
    - भारत में उदाहरण:
        - **जाति व्यवस्था** : पदानुक्रमित सामाजिक स्तरीकरण, विवाह, व्यवसाय और राजनीति को प्रभावित करना।
        - **परिवार** : ग्रामीण भारत में संयुक्त परिवार बनाम शहरी क्षेत्रों में एकल परिवार।
    - प्रासंगिकता: आरपीएससी परीक्षाओं में जाति और पारिवारिक गतिशीलता पर प्रश्न आम हैं।
- **सामाजिक संस्थाएँ** :
    - परिभाषा: मानदंडों और भूमिकाओं की स्थापित प्रणालियाँ जो सामाजिक आवश्यकताओं (जैसे, विवाह, शिक्षा, धर्म) को पूरा करती हैं।
    - भारत में उदाहरण:
        - **धर्म** : सामाजिक मानदंडों को आकार देने में हिंदू धर्म, इस्लाम और जनजातीय मान्यताओं की भूमिका।
        - **शिक्षा** : सामाजिक गतिशीलता पर आरक्षण नीतियों का प्रभाव।
    - प्रासंगिकता: संस्थाएं PYQs में एक आवर्ती विषय हैं, विशेष रूप से सामाजिक नियंत्रण में उनकी भूमिका।
- **सामाजिक प्रक्रियाएँ** :
    - परिभाषा: सामाजिक संबंधों को आकार देने वाली गतिशील अंतःक्रियाएं (जैसे, सहयोग, संघर्ष, आत्मसात)।
    - भारत में उदाहरण:
        - **संघर्ष** : ग्रामीण क्षेत्रों में जाति आधारित हिंसा।
        - **आत्मसातीकरण** : जनजातीय समुदायों का मुख्यधारा समाज में एकीकरण।
    - प्रासंगिकता: सामाजिक परिवर्तन और गतिशीलता पर प्रश्नों में सामाजिक प्रक्रियाओं का परीक्षण किया जाता है।
- **सामाजिक समूहों** :
    - परिभाषा: साझा हितों या पहचान वाले व्यक्तियों का समूह (जैसे, प्राथमिक, द्वितीयक समूह)।
    - भारत में उदाहरण:
        - **प्राथमिक समूह** : ग्रामीण राजस्थान में परिवार और रिश्तेदारी नेटवर्क।
        - **द्वितीयक समूह** : गैर सरकारी संगठन और राजनीतिक दल जैसे शहरी संगठन।
    - प्रासंगिकता: समूह गतिशीलता समाजीकरण और सामाजिक नियंत्रण पर प्रश्नों के लिए महत्वपूर्ण है।
- **सामाजिक परिवर्तन और विचलन** :
    - परिभाषा: सामाजिक संरचनाओं और व्यवहारों में परिवर्तन, जिसमें मानदंडों से विचलन भी शामिल है।
    - भारत में उदाहरण:
        - **सामाजिक परिवर्तन** : पारंपरिक व्यवसायों पर वैश्वीकरण का प्रभाव।
        - **विचलन** : शहरी मलिन बस्तियों में किशोर अपराध।
    - प्रासंगिकता: ये विषय आरपीएससी परीक्षाओं में तेजी से परीक्षण किए जाते हैं, जो समकालीन मुद्दों को दर्शाते हैं।

समाजशास्त्र बनाम अन्य विषय

विषय-वस्तु को स्पष्ट करने के लिए, समाजशास्त्र को संबंधित विषयों से अलग किया गया है:

- **समाजशास्त्र बनाम नृविज्ञान** :
  - समाजशास्त्र आधुनिक, जटिल समाजों पर ध्यान केंद्रित करता है, जबकि मानवशास्त्र पारंपरिक, छोटे पैमाने के समाजों का अध्ययन करता है।
  - भारत में: समाजशास्त्र शहरी जाति गतिशीलता की जांच करता है, जबकि मानवशास्त्र जनजातीय संस्कृतियों (जैसे, राजस्थान में भील) का अध्ययन करता है।
- **समाजशास्त्र बनाम मनोविज्ञान** :
  - समाजशास्त्र सामूहिक व्यवहार का अध्ययन करता है, जबकि मनोविज्ञान व्यक्तिगत मानसिक प्रक्रियाओं पर ध्यान केंद्रित करता है।
  - उदाहरण: समाजशास्त्र जाति प्रथाओं में समूह अनुरूपता का विश्लेषण करता है, जबकि मनोविज्ञान व्यक्तिगत प्रेरणाओं की जांच करता है।
- **समाजशास्त्र बनाम इतिहास** :
  - समाजशास्त्र सामाजिक व्यवहार के सामान्य नियमों का अध्ययन करता है, जबकि इतिहास विशिष्ट घटनाओं का अध्ययन करता है।
  - उदाहरण: समाजशास्त्र जातिगत असमानता के स्वरूपों का अन्वेषण करता है, जबकि इतिहास जाति व्यवस्था के विकास का पता लगाता है।
- **समाजशास्त्र बनाम राजनीति विज्ञान** :
  - समाजशास्त्र व्यापक सामाजिक संरचनाओं की जांच करता है, जबकि राजनीति विज्ञान सत्ता और शासन पर ध्यान केंद्रित करता है।
  - उदाहरण: समाजशास्त्र राजनीतिक दलों के सामाजिक आधार का अध्ययन करता है, जबकि राजनीति विज्ञान चुनावी प्रणालियों का विश्लेषण करता है।

भारतीय संदर्भ: अद्वितीय विषय-वस्तु

औपनिवेशिक इतिहास, सांस्कृतिक विविधता और सामाजिक सुधार आंदोलनों द्वारा आकारित भारतीय समाजशास्त्र की एक विशिष्ट विषय-वस्तु है:

- **जाति और वर्ग** : भारतीय समाजशास्त्र का केंद्र, जाति गतिशीलता पर अध्ययन के साथ (उदाहरण के लिए, एमएन श्रीनिवास द्वारा संस्कृतीकरण)।
- **ग्रामीण-शहरी विभाजन** : कृषि संकट, शहरीकरण और प्रवास का विश्लेषण।
- **धर्म और धर्मनिरपेक्षता** : सामाजिक सामंजस्य और संघर्ष में धार्मिक बहुलवाद की भूमिका।
- **लिंग और पितृसत्ता** : दहेज, कन्या भ्रूण हत्या और महिला सशक्तिकरण जैसे मुद्दे।
- **जनजातीय समाज :** संथाल और गोंड जैसी जनजातियों का एकीकरण बनाम स्वायत्तता ।
- **वैश्वीकरण** : पारंपरिक सामाजिक संरचनाओं पर प्रभाव (जैसे, संयुक्त परिवारों का पतन)।

ऐतिहासिक संदर्भ: समाजशास्त्र और ज्ञानोदय

19वीं सदी में समाजशास्त्र का उदय ज्ञानोदय से निकटता से जुड़ा था, जो तर्क, विज्ञान और प्रगति पर ज़ोर देने वाला एक दार्शनिक आंदोलन था। समाजशास्त्र पर ज्ञानोदय के प्रमुख प्रभावों में शामिल हैं:

- **तर्कसंगतता और अनुभववाद** :
  - वोल्टेयर और रूसो जैसे ज्ञानोदय विचारकों ने वैज्ञानिक जांच की वकालत की, जिससे कॉम्टे के प्रत्यक्षवाद को प्रेरणा मिली।
  - समाजशास्त्र ने सामाजिक व्यवस्था का अध्ययन करने के लिए अनुभवजन्य तरीकों को अपनाया (उदाहरण के लिए, दुर्खीम का आत्महत्या का अध्ययन)।
- **सामाजिक प्रगति** :
  - मानव प्रगति के ज्ञानोदय संबंधी विचारों ने समाजशास्त्र का ध्यान सामाजिक परिवर्तन और सुधार पर केन्द्रित किया।
  - उदाहरण: कॉम्टे का तीन-चरणीय सिद्धांत (धर्मशास्त्रीय, आध्यात्मिक, सकारात्मक) ज्ञानोदय आशावाद को दर्शाता है।
- **परंपरा की आलोचना** :
  - ज्ञानोदय ने सामंती और धार्मिक सत्ता को चुनौती दी, जिससे समाजशास्त्र ने पारंपरिक संस्थाओं पर प्रश्न उठाए।
  - उदाहरण: वेबर का नौकरशाही संबंधी विश्लेषण तर्कसंगतीकरण को दर्शाता है, जो कि ज्ञानोदय की विरासत है।
- **भारतीय कनेक्शन** :
  - ज्ञानोदय युग के दौरान औपनिवेशिक मुठभेड़ों ने ब्रिटिश प्रशासकों द्वारा भारतीय समाज के प्रारंभिक समाजशास्त्रीय अध्ययनों को प्रेरित किया (उदाहरण के लिए, *भारत की जनगणना*)।
  - राजा राम मोहन राय जैसे भारतीय समाज सुधारकों ने, ज्ञानोदय के आदर्शों से प्रभावित होकर, भारतीय समाजशास्त्र की आधारशिला रखी।

विषय-वस्तु पर सैद्धांतिक दृष्टिकोण

समाजशास्त्र की विषय-वस्तु की व्याख्या विभिन्न दृष्टिकोणों से की जाती है, जिनमें से प्रत्येक एक अद्वितीय दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है:

- **कार्यात्मकतावादी परिप्रेक्ष्य** (डर्कहेम, पार्सन्स):
  - समाज को परस्पर संबंधित भागों की एक प्रणाली के रूप में देखते हैं, जिसमें संस्थाएं संतुलन बनाए रखती हैं।
  - विषय-वस्तु: सामाजिक एकीकरण, मानदंड और संस्थाएँ।
  - उदाहरण: पारंपरिक भारत में सामाजिक व्यवस्था बनाए रखने में जाति की भूमिका।
- **संघर्ष परिप्रेक्ष्य** (मार्क्स, डाहरेंडोर्फ) :
  - सामाजिक समूहों के बीच सत्ता संघर्ष और असमानताओं पर जोर दिया गया है।
  - विषय-वस्तु: वर्ग संघर्ष, शोषण और सामाजिक परिवर्तन।
  - उदाहरण: ग्रामीण भारत में भूमि स्वामित्व में जाति और वर्ग संघर्ष।
- **प्रतीकात्मक अंतःक्रियावादी परिप्रेक्ष्य** (मीड, ब्लूमर):
  - सूक्ष्म स्तर पर अंतःक्रियाओं और व्यक्तियों द्वारा सामाजिक घटनाओं को दिए गए अर्थों पर ध्यान केंद्रित करता है।
  - विषय-वस्तु: सामाजिक भूमिकाएँ, पहचान और अंतःक्रियाएँ।
  - उदाहरण: भारतीय विवाहों में लिंग भूमिकाओं पर बातचीत।
- **नारीवादी परिप्रेक्ष्य** :
  - लैंगिक असमानताओं और पितृसत्तात्मक संरचनाओं की जांच करता है।
  - विषय-वस्तु: लिंग भूमिकाएं, महिलाओं की एजेंसी, और अंतर्संबंध।
  - उदाहरण: राजस्थान में महिलाओं की स्थिति पर दहेज प्रथा का प्रभाव।
- **उत्तरआधुनिक परिप्रेक्ष्य** :
  - विविधता और विखंडन पर ध्यान केंद्रित करते हुए भव्य आख्यानों पर प्रश्न उठाएं।
  - विषय-वस्तु: वैश्वीकरण, डिजिटल समाज और पहचान की राजनीति।
  - उदाहरण: शहरी भारत में युवाओं की पहचान को आकार देने में सोशल मीडिया की भूमिका।

PYQ विश्लेषण

2016

प्रश्न : "समाजशास्त्र का प्राथमिक विषय-वस्तु क्या है?"

A) व्यक्तिगत व्यवहार,

B) सामाजिक संबंध,

C) आर्थिक प्रणालियाँ,

D) राजनीतिक संस्थाएं.

उत्तर : B) सामाजिक संबंध।

व्याख्या : समाजशास्त्र सामाजिक अंतःक्रियाओं, समूहों और संस्थाओं का अध्ययन करता है, न कि व्यक्तिगत व्यवहार या पृथक प्रणालियों का।

2018

प्रश्न : "समाजशास्त्र को सामाजिक घटनाओं के विज्ञान के रूप में किसने परिभाषित किया?"

A) दुर्खीम,

B) वेबर,

C) कॉम्टे,

D) मार्क्स.

उत्तर : C) कॉम्टे.

व्याख्या : कॉम्टे ने समाजशास्त्र शब्द गढ़ा और सामाजिक घटनाओं के वैज्ञानिक अध्ययन पर जोर दिया।

2020

प्रश्न : "समाजशास्त्र मानवशास्त्र से किस प्रकार भिन्न है?"

A) आधुनिक समाजों पर ध्यान केंद्रित करें,

B) अनुभवजन्य विधियों का उपयोग,

C) सामाजिक परिवर्तन का अध्ययन,

D) संस्थाओं का विश्लेषण।

उत्तर : A) आधुनिक समाजों पर ध्यान केंद्रित करें।

व्याख्या : समाजशास्त्र जटिल, आधुनिक समाजों का अध्ययन करता है, जबकि नृविज्ञान पारंपरिक, छोटे पैमाने के समाजों पर ध्यान केंद्रित करता है।

2022

प्रश्न : "समाजशास्त्र पर ज्ञानोदय का क्या प्रभाव पड़ा?"

A) परंपरा पर जोर दिया,

B) अनुभवजन्य जांच को बढ़ावा दिया,

C) सामाजिक परिवर्तन को अस्वीकार कर दिया,

D) धर्म पर केन्द्रित.

उत्तर : B) अनुभवजन्य जांच को बढ़ावा दिया।

व्याख्या : ज्ञानोदय के कारण और विज्ञान पर जोर ने समाजशास्त्र के अनुभवजन्य दृष्टिकोण को आकार दिया।

2024

प्रश्न : "किस भारतीय समाजशास्त्री ने जाति और रिश्तेदारी के अध्ययन पर जोर दिया?"

A) एमएन श्रीनिवास,

B) जीएस घुर्ये ,

C) एआर देसाई,

D) योगेन्द्र सिंह.

उत्तर : B) जीएस घुर्ये .

व्याख्या : घुर्ये का *भारत में जाति और नस्ल* भारतीय सामाजिक संस्थाओं पर एक मौलिक कार्य है।

केस स्टडी: राजस्थान में जाति का समाजशास्त्र

- **संदर्भ** : राजस्थान की सामाजिक संरचना जाति से काफी प्रभावित है, जिसमें राजपूत , जाट और अनुसूचित जाति जैसे समुदाय सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक जीवन को आकार देते हैं।
- **समाजशास्त्रीय विश्लेषण** :
    - **सामाजिक संरचना** : जाति व्यवसाय निर्धारित करती है (उदाहरण के लिए, जाट किसान हैं, राजपूत जमींदार हैं)।
    - **सामाजिक संस्थाएँ** : विवाह प्रथाएँ जातिगत अंतर्विवाह को मजबूत करती हैं।
    - **सामाजिक प्रक्रियाएँ** : जाति-आधारित भूमि विवादों में संघर्ष उत्पन्न होता है; संस्कृतिकरण के माध्यम से आत्मसातीकरण होता है।
    - **सामाजिक परिवर्तन** : आरक्षण नीतियां अनुसूचित जातियों के बीच ऊर्ध्वगामी गतिशीलता को बढ़ावा देती हैं।
- **प्रासंगिकता** : यह केस स्टडी भारतीय संदर्भ में समाजशास्त्र की विषय-वस्तु को दर्शाती है, तथा जातिगत गतिशीलता पर आरपीएससी के प्रश्नों को संबोधित करती है।
- **उदाहरण**
- **प्रश्न :** "राजस्थान में जाति एक सामाजिक संरचना के रूप में कैसे कार्य करती है?"
    - **उत्तर** : जाति सामाजिक संबंधों को व्यवस्थित करती है, भूमिकाएं, स्थिति और संसाधनों तक पहुंच का निर्धारण करती है, साथ ही संघर्ष और गतिशीलता को भी आकार देती है।

Toppers Notes
Unleash the topper in you

आलोचनात्मक विश्लेषण

- **समाजशास्त्र की विषय-वस्तु की ताकतें** :
    - व्यापक क्षेत्र जाति से लेकर वैश्वीकरण तक विविध घटनाओं के विश्लेषण की अनुमति देता है।
    - अनुभवजन्य दृष्टिकोण वस्तुनिष्ठता सुनिश्चित करता है, जो नीति-निर्माण के लिए प्रासंगिक है (उदाहरण के लिए, भारत में सामाजिक कल्याण योजनाएं)।
    - भारतीय समाजशास्त्र का सांस्कृतिक विशिष्टता (जैसे, इंडोलॉजी) पर ध्यान केंद्रित करना वैश्विक समाजशास्त्र को समृद्ध बनाता है।
- **सीमाएँ** :
    - वृहद संरचनाओं (जैसे, जाति) पर अत्यधिक जोर देने से सूक्ष्म अंतःक्रियाओं की उपेक्षा हो सकती है।
    - भारत के विविध क्षेत्रों में निष्कर्षों को सामान्य बनाने में चुनौतियाँ।
    - पश्चिमी सिद्धांतों (जैसे, प्रकार्यवाद) और भारतीय वास्तविकताओं (जैसे, जाति एक अद्वितीय प्रणाली के रूप में) के बीच तनाव।
- **समकालीन प्रासंगिकता** :
    - समाजशास्त्र डिजिटल विभाजन, पर्यावरणीय न्याय और लैंगिक समानता जैसे आधुनिक मुद्दों को संबोधित करता है।
    - भारत में, समाजशास्त्र आरक्षण, ग्रामीण विकास और सामाजिक समावेशन पर नीतियों को सूचित करता है।

निष्कर्ष

इस अध्याय में समाजशास्त्र के अर्थ, परिभाषा और विषय-वस्तु का व्यापक अन्वेषण किया गया है। सामाजिक संबंधों और संस्थाओं के वैज्ञानिक अध्ययन के रूप में समाजशास्त्र, जटिल सामाजिक परिघटनाओं को, विशेष रूप से भारत के विविध संदर्भ में, समझने का एक दृष्टिकोण प्रदान करता है। शास्त्रीय परिभाषाओं (कॉम्टे, दुर्खीम), भारतीय दृष्टिकोणों (घुर्ये) और ज्ञानोदय के प्रभावों को एकीकृत करके, यह अध्याय सुनिश्चित करता है कि अभ्यर्थी समाजशास्त्र की मूल बातें समझें। सामाजिक संरचनाओं, संस्थाओं, प्रक्रियाओं और परिवर्तन को समाहित करने वाली विषय-वस्तु को जाति और पारिवारिक गतिशीलता जैसे भारतीय उदाहरणों के माध्यम से प्रासंगिक बनाया गया है।

समाजशास्त्र का दायरा और प्रकृति

परिचय

समाजशास्त्र का दायरा और प्रकृति एक विषय के रूप में इसकी सीमाओं, विधियों और चरित्र को परिभाषित करते हैं, और सामाजिक घटनाओं के विश्लेषण में इसकी भूमिका को समझने के लिए एक रूपरेखा प्रदान करते हैं। ये अवधारणाएँ उम्मीदवारों के लिए आवश्यक हैं, क्योंकि ये राजस्थान में जातिगत गतिशीलता से लेकर भारतीय समाज पर वैश्वीकरण के प्रभाव तक, विविध सामाजिक मुद्दों को संबोधित करने की इस विषय की क्षमता का आधार हैं। समाजशास्त्र का दायरा उन विषयों और मुद्दों की सीमा को रेखांकित करता है जिनका यह अध्ययन करता है, जबकि इसकी प्रकृति यह स्पष्ट करती है कि यह विज्ञान है, कला है या दोनों का मिश्रण है, और यह अनुभवजन्य और व्याख्यात्मक दृष्टिकोणों को कैसे अपनाता है।

यह अध्याय समाजशास्त्र के दायरे और प्रकृति का गहन अन्वेषण करता है, इसके विषय क्षेत्रों, पद्धतिगत दृष्टिकोणों और इसकी वैज्ञानिक स्थिति पर बहस को शामिल करता है। यह शास्त्रीय और समकालीन दृष्टिकोणों को एकीकृत करता है, और भारतीय समाजशास्त्र के अद्वितीय योगदानों (जैसे, जाति, नातेदारी और ग्रामीण-शहरी संक्रमण के अध्ययन) पर केंद्रित है।

समाजशास्त्र का दायरा और प्रकृति
समाजशास्त्र का दायरा
समाजशास्त्र के दायरे के आयाम

- **मूल दायरा** :
  - **परिभाषा** : समाजशास्त्र जिस विषय-वस्तु या विषय-वस्तु की जांच करता है, उसमें सामाजिक संरचनाएं, संस्थाएं, प्रक्रियाएं, समूह और परिवर्तन शामिल हैं।
  - **प्रमुख क्षेत्र** :
    - **सामाजिक संरचनाएं** : संबंधों के पैटर्न, जैसे जाति, वर्ग और लिंग पदानुक्रम।
    - **सामाजिक संस्थाएँ** : परिवार, विवाह, धर्म और शिक्षा जैसी प्रणालियाँ।
    - **सामाजिक प्रक्रियाएँ** : सहयोग, संघर्ष और आत्मसात जैसी अंतःक्रियाएँ।
    - **सामाजिक समूह** : प्राथमिक (जैसे, परिवार) और द्वितीयक (जैसे, राजनीतिक दल) समूह।
    - **सामाजिक परिवर्तन और विचलन** : परिवर्तन (जैसे, शहरीकरण) और मानदंड उल्लंघन (जैसे, अपराध)।
  - **भारतीय संदर्भ** :
    - भारत में समाजशास्त्र जाति (जैसे, जाति और वर्ण व्यवस्था), जनजातीय समाज (जैसे, राजस्थान में भील) और धार्मिक बहुलवाद (जैसे, हिंदू-मुस्लिम संबंध) का अध्ययन करता है।
    - उदाहरण: एम.एन. श्रीनिवास की *संस्कृतिकरण की अवधारणा* ग्रामीण भारत में जातिगत गतिशीलता की व्याख्या करती है।
  - **प्रासंगिकता** : आरपीएससी प्रश्न अक्सर समाजशास्त्र के मूल क्षेत्रों, विशेष रूप से भारत में जाति और परिवार की पहचान करने की क्षमता का परीक्षण करते हैं।
- **पद्धतिगत दायरा** :
  - **परिभाषा** : समाजशास्त्र सामाजिक घटनाओं का अध्ययन करने के लिए अनुसंधान विधियों और उपकरणों का उपयोग करता है।
  - **प्रमुख विधियाँ** :
    - **मात्रात्मक विधियाँ** : सर्वेक्षण, सांख्यिकीय विश्लेषण और जनगणना डेटा (जैसे, राजस्थान में साक्षरता दर का विश्लेषण)।
    - **गुणात्मक विधियाँ** : नृवंशविज्ञान, साक्षात्कार और केस अध्ययन (जैसे, उदयपुर में आदिवासी त्योहारों का अध्ययन)।
    - **तुलनात्मक विधि** : समाजों या समूहों की तुलना करना (जैसे, ग्रामीण बनाम शहरी परिवार संरचनाएं)।
    - **ऐतिहासिक विधि** : समय के साथ सामाजिक परिवर्तन का विश्लेषण करना (जैसे, औपनिवेशिक शासन के तहत जाति का विकास)।
  - **भारतीय संदर्भ** :
    - जी.एस.घुर्ये जैसे भारतीय समाजशास्त्रियों ने जाति और धर्म का अध्ययन करने के लिए ऐतिहासिक और इंडोलॉजिकल तरीकों का इस्तेमाल किया।
    - उदाहरण: ए.आर. देसाई की पुस्तक ' *भारतीय राष्ट्रवाद की सामाजिक पृष्ठभूमि' में* सामाजिक आंदोलनों का विश्लेषण करने के लिए ऐतिहासिक भौतिकवाद का उपयोग किया गया।
  - **प्रासंगिकता** : पी.वाई.क्यू. में अक्सर समाजशास्त्रीय तरीकों, विशेषकर भारतीय मुद्दों पर उनके अनुप्रयोग के बारे में पूछा जाता है।
- **सैद्धांतिक दायरा** :
  - **परिभाषा** : समाजशास्त्र सामाजिक घटनाओं की व्याख्या करने के लिए सैद्धांतिक ढांचे का उपयोग करता है।
  - **प्रमुख परिप्रेक्ष्य** :
    - **कार्यात्मकतावाद** : समाज को परस्पर जुड़े भागों की एक प्रणाली के रूप में देखता है (उदाहरण, टैल्कॉट पार्सन्स, रॉबर्ट मर्टन)।

Unleash the topper in you

        - **संघर्ष सिद्धांत** : शक्ति संघर्ष और असमानताओं पर ध्यान केंद्रित करता है (उदाहरण के लिए, कार्ल मार्क्स, राल्फ डाहरेंडोर्फ)।
        - **प्रतीकात्मक अंतःक्रियावाद** : सूक्ष्म स्तर के अर्थों और अंतःक्रियाओं की जांच करता है (उदाहरण के लिए, जॉर्ज हर्बर्ट मीड, हर्बर्ट ब्लूमर)।
        - **नारीवादी समाजशास्त्र** : लैंगिक असमानताओं का विश्लेषण (जैसे, लीला दुबे का भारतीय महिलाओं पर कार्य)।
        - **उत्तरआधुनिकतावाद** : विविधता पर ध्यान केंद्रित करते हुए भव्य आख्यानों पर प्रश्न उठाता है (उदाहरण के लिए, जीन बौद्रिलार्ड)।
    - **भारतीय संदर्भ** :
        - भारतीय समाजशास्त्री पश्चिमी सिद्धांतों को स्वदेशी दृष्टिकोणों के साथ मिश्रित करते हैं (उदाहरण के लिए, योगेन्द्र सिंह की *भारतीय परंपरा का आधुनिकीकरण*)।
        - उदाहरण: दीपांकर गुप्ता का जाति पर कार्य संघर्ष और अंतःक्रियावादी दृष्टिकोणों को जोड़ता है।
    - **प्रासंगिकता** : आरपीएससी परीक्षा सैद्धांतिक अनुप्रयोगों का परीक्षण करती है, जैसे जाति के बारे में कार्यात्मकता का दृष्टिकोण या वर्ग के बारे में संघर्ष सिद्धांत का विश्लेषण।
- **अनुप्रयुक्त क्षेत्र** :
    - **परिभाषा** : सामाजिक मुद्दों को संबोधित करने और नीति बनाने में समाजशास्त्र के व्यावहारिक अनुप्रयोग।
    - **प्रमुख क्षेत्र** :
        - **सामाजिक नीति** : कल्याणकारी कार्यक्रमों की रूपरेखा तैयार करना (जैसे, ग्रामीण रोजगार के लिए मनरेगा)।
        - **विकास समाजशास्त्र** : ग्रामीण विकास, शहरीकरण और गरीबी उन्मूलन का अध्ययन।
        - **अपराध विज्ञान** : विचलन और अपराध का विश्लेषण (उदाहरणार्थ, शहरी भारत में किशोर अपराध)।
        - **संगठनात्मक समाजशास्त्र** : नौकरशाही और कार्यस्थलों की जांच।
    - **भारतीय संदर्भ** :
        - समाजशास्त्र आरक्षण, लैंगिक समानता और जनजातीय एकीकरण पर नीतियों को सूचित करता है।
        - उदाहरण: राजस्थान की *पंचायती राज* व्यवस्था के समाजशास्त्रीय अध्ययन से स्थानीय शासन में सुधार होता है।
    - **प्रासंगिकता** : अनुप्रयुक्त समाजशास्त्र पर प्रश्न आम हैं, विशेष रूप से भारतीय सामाजिक समस्याओं के संबंध में।

समाजशास्त्र का अंतःविषय क्षेत्र
समाजशास्त्र अन्य विषयों के साथ जुड़कर अपना दायरा बढ़ाता है:

- **समाजशास्त्र और नृविज्ञान** :
    - संस्कृति और सामाजिक संगठन के अध्ययन में समानता है, लेकिन समाजशास्त्र आधुनिक समाजों पर ध्यान केंद्रित करता है।
    - भारतीय उदाहरण: समाजशास्त्र शहरी जाति गतिशीलता का अध्ययन करता है, जबकि नृविज्ञान आदिवासी अनुष्ठानों (जैसे, संथाल नृत्य) की जांच करता है।
- **समाजशास्त्र और अर्थशास्त्र** :
    - समाजशास्त्र आर्थिक व्यवहार के सामाजिक संदर्भ का विश्लेषण करता है (जैसे, जाति-आधारित व्यावसायिक पृथक्करण)।
    - उदाहरण: राजस्थान में कृषि संकट के अध्ययन में भूमि स्वामित्व जैसे सामाजिक कारकों पर प्रकाश डाला गया है।
- **समाजशास्त्र और राजनीति विज्ञान** :
    - समाजशास्त्र सत्ता के सामाजिक आधारों (जैसे, चुनावी राजनीति में जाति) की जांच करता है।
    - उदाहरण: राजस्थान की राजनीति में राजपूत प्रभुत्व का विश्लेषण।
- **समाजशास्त्र और मनोविज्ञान** :
    - समाजशास्त्र सामूहिक व्यवहार का अध्ययन करता है, जबकि मनोविज्ञान व्यक्तिगत मन पर ध्यान केंद्रित करता है।
    - उदाहरण: समाजशास्त्र जाति प्रथाओं में समूह अनुरूपता की खोज करता है, जबकि मनोविज्ञान व्यक्तिगत पूर्वाग्रह की जांच करता है।
- **समाजशास्त्र और इतिहास** :
    - समाजशास्त्र सामान्य पैटर्न की तलाश करता है, जबकि इतिहास विशिष्ट घटनाओं का अध्ययन करता है।
    - उदाहरण: समाजशास्त्र जाति को एक व्यवस्था के रूप में विश्लेषित करता है, जबकि इतिहास इसके औपनिवेशिक परिवर्तनों का पता लगाता है।

भारतीय समाजशास्त्र में संभावनाएं
भारतीय समाजशास्त्र का दायरा देश के अद्वितीय सामाजिक, सांस्कृतिक और ऐतिहासिक संदर्भ द्वारा निर्धारित होता है:

- **जाति और रिश्तेदारी** :
    - भारतीय समाजशास्त्र का केन्द्रबिन्दु, जातिगत पदानुक्रम, गतिशीलता और अंतर्विवाह पर अध्ययन।
    - उदाहरण: जी.एस.घुर्ये का *भारत में जाति और नस्ल,* जाति के सामाजिक और सांस्कृतिक आयामों की पड़ताल करती है।

- **ग्रामीण-शहरी गतिशीलता** :
  - कृषि समाज, शहरीकरण और प्रवास का विश्लेषण।
  - उदाहरण: जयपुर के शहरी विकास और पारंपरिक समुदायों पर इसके प्रभाव का अध्ययन।
- **धर्म और धर्मनिरपेक्षता** :
  - धार्मिक विविधता और सामाजिक सामंजस्य या संघर्ष में इसकी भूमिका की जांच।
  - उदाहरण: राजस्थान के सांप्रदायिक संदर्भ में हिंदू-मुस्लिम संबंधों का समाजशास्त्रीय अध्ययन।
- **लिंग और पितृसत्ता** :
  - महिलाओं की स्थिति, दहेज और सशक्तिकरण पर ध्यान केंद्रित करें।
  - उदाहरण: राजस्थान के पितृसत्तात्मक समुदायों में कन्या भ्रूण हत्या का विश्लेषण।
- **जनजातीय समाज** :
  - जनजातीय एकीकरण, स्वायत्तता और सांस्कृतिक संरक्षण का अध्ययन।
  - उदाहरण: दक्षिणी राजस्थान में भील और मीना जनजातियों का समाजशास्त्र।
- **वैश्वीकरण और आधुनिकीकरण** :
  - परिवार और जाति जैसी पारंपरिक संरचनाओं पर प्रभाव।
  - उदाहरण: शहरी राजस्थान में युवा संस्कृति पर डिजिटल मीडिया का प्रभाव।

समाजशास्त्र के दायरे पर बहस
- **सार्वभौमिक बनाम प्रासंगिक** :
  - कुछ लोग तर्क देते हैं कि समाजशास्त्र का दायरा सार्वभौमिक है, जो सामान्य नियमों की तलाश करता है (उदाहरण के लिए, दुर्खीम के सामाजिक तथ्य)।
  - अन्य लोग संदर्भगत विशिष्टता पर जोर देते हैं, विशेष रूप से भारत में (उदाहरण के लिए, घुर्ये का इंडोलॉजिकल दृष्टिकोण)।
- **सूक्ष्म बनाम स्थूल** :
  - सूक्ष्म-समाजशास्त्र अंतःक्रियाओं (जैसे, प्रतीकात्मक अंतःक्रियावाद) पर ध्यान केंद्रित करता है, जबकि वृहद-समाजशास्त्र संरचनाओं (जैसे, कार्यात्मकतावाद) का अध्ययन करता है।
  - भारतीय समाजशास्त्र दोनों में संतुलन स्थापित करता है, व्यक्तिगत जातिगत पहचान और प्रणालीगत असमानताओं का अध्ययन करता है।
- **स्थैतिक बनाम गतिशील** :
  - प्रारंभिक समाजशास्त्र स्थिर संरचनाओं (जैसे, कॉम्टे की सामाजिक व्यवस्था) पर केंद्रित था, जबकि आधुनिक समाजशास्त्र परिवर्तन (जैसे, वैश्वीकरण) पर जोर देता है।
  - भारतीय समाजशास्त्र निरंतरता (जैसे, जाति की निरंतरता) और परिवर्तन (जैसे, शहरीकरण) दोनों का अध्ययन करता है।

समाजशास्त्र की प्रकृति
समाजशास्त्र की प्रकृति एक विषय के रूप में इसके चरित्र को दर्शाती है, जिसमें इसकी वैज्ञानिक स्थिति, पद्धतिगत दृष्टिकोण और दार्शनिक आधार शामिल हैं। समाजशास्त्र की प्रकृति पर बहस इस बात पर केंद्रित है कि यह एक विज्ञान है, एक कला है, या इनका संयोजन है, और यह वस्तुनिष्ठता और व्याख्यात्मक समझ के बीच संतुलन कैसे बनाता है।

समाजशास्त्र एक विज्ञान के रूप में
समाजशास्त्र का विज्ञान होने का दावा सामाजिक घटनाओं के व्यवस्थित, अनुभवजन्य और वस्तुनिष्ठ अध्ययन पर आधारित है।
- **विज्ञान की विशेषताएँ** :
  - **अनुभवजन्य अवलोकन** : समाजशास्त्र सर्वेक्षणों, नृवंशविज्ञान और प्रयोगों से प्राप्त आंकड़ों का उपयोग करता है।
  - **व्यवस्थित विधियाँ** : प्रश्नावली और सांख्यिकीय विश्लेषण जैसे मानकीकृत उपकरण।
  - **वस्तुनिष्ठता** : विश्वसनीय निष्कर्ष सुनिश्चित करने के लिए शोधकर्ता के पूर्वाग्रह को न्यूनतम करना।
  - **सामान्यीकरण** : पैटर्न और नियमों की खोज करना (उदाहरण के लिए, दुर्खीम के सामाजिक एकजुटता के नियम)।
- **प्रमुख प्रस्तावक** :
  - **ऑगस्ट कॉम्टे** : प्रत्यक्षवाद का समर्थन करते हुए तर्क दिया कि समाजशास्त्र को प्राकृतिक विज्ञानों की तरह सामाजिक नियमों की खोज करनी चाहिए।
  - **एमिल दुर्खीम** : सामाजिक तथ्यों को वस्तुनिष्ठ, मापनीय घटना (जैसे, आत्महत्या दर) के रूप में महत्व दिया।
- **भारतीय उदाहरण** :
  - सामाजिक प्रवृत्तियों की पहचान करने के लिए जाति और साक्षरता पर भारत की जनगणना के आंकड़ों का वैज्ञानिक रूप से विश्लेषण किया जाता है।
  - उदाहरण: राजस्थान के लिंगानुपात के समाजशास्त्रीय अध्ययन में लिंग असंतुलन को दूर करने के लिए सांख्यिकीय विधियों का उपयोग किया जाता है।

- **सीमाएँ** :
    - सामाजिक घटनाएं जटिल और संदर्भ-विशिष्ट होती हैं, जो सार्वभौमिक नियमों को चुनौती देती हैं।
    - मानवीय क्रियाकलाप पूर्वानुमानित प्राकृतिक घटनाओं के विपरीत परिवर्तनशीलता लाते हैं।
    - नैतिक बाधाएं प्रयोगात्मक विधियों को सीमित करती हैं (उदाहरण के लिए, सामाजिक समूहों में हेरफेर नहीं किया जा सकता)।

एक कला के रूप में समाजशास्त्र

कुछ लोग तर्क देते हैं कि समाजशास्त्र एक कला है, जो इसके व्याख्यात्मक, रचनात्मक और व्यक्तिपरक तत्वों पर जोर देती है।

- **एक कला की विशेषताएँ** :
    - **व्याख्यात्मक समझ** : समाजशास्त्र व्यक्तिपरक अर्थों की खोज करता है (उदाहरण के लिए, वेबर का *वर्स्टेन*)।
    - **कथात्मक और वर्णनात्मक** : समृद्ध नृवंशविज्ञान और केस अध्ययन (उदाहरण के लिए, श्रीनिवास की *द रिमेंबरड विलेज*)।
    - **मूल्य-संचालित** : समाजशास्त्र अक्सर सामाजिक न्याय को संबोधित करता है, तथा मानक चिंताओं को प्रतिबिंबित करता है।
- **प्रमुख प्रस्तावक** :
    - **मैक्स वेबर** : सामाजिक क्रिया की व्याख्यात्मक समझ पर जोर दिया।
    - **सी. राइट मिल्स** : व्यक्तिगत अनुभवों को सामाजिक संरचनाओं से जोड़ने के लिए "समाजशास्त्रीय कल्पना" की वकालत की।
- **भारतीय उदाहरण** :
    - राजस्थान के जनजातीय त्योहारों (जैसे, भील मेले) के नृवंशविज्ञान संबंधी अध्ययन सांस्कृतिक अर्थों को पकड़ते हैं।
    - उदाहरण: लीला भारतीय महिलाओं पर दुबे का काम पितृसत्तात्मक अनुभवों को उजागर करने के लिए कथा का उपयोग करता है।
- **सीमाएँ** :
    - व्यक्तिपरकता से पूर्वाग्रह का खतरा होता है, जिससे विश्वसनीयता कम हो जाती है।
    - व्याख्यात्मक अध्ययनों में सामान्यीकरण का अभाव।

समाजशास्त्र एक विज्ञान और कला के रूप में

अधिकांश समाजशास्त्री समाजशास्त्र को विज्ञान और कला का मिश्रण मानते हैं, जिसमें अनुभवजन्य कठोरता के साथ व्याख्यात्मक गहराई का संयोजन होता है।

- **संतुलित दृष्टिकोण** :
    - **वैज्ञानिक विधियाँ** : वस्तुनिष्ठ विश्लेषण के लिए मात्रात्मक डेटा (जैसे, जाति गतिशीलता पर सर्वेक्षण)।
    - **व्याख्यात्मक अंतर्दृष्टि** : अर्थ समझने के लिए गुणात्मक विधियाँ (जैसे, आदिवासी नेताओं के साथ साक्षात्कार)।
- **भारतीय संदर्भ** :
    - भारतीय समाजशास्त्र दोनों दृष्टिकोणों का उपयोग करता है: शहरीकरण का मात्रात्मक अध्ययन (जैसे, जयपुर का विकास) और जातिगत पहचान का गुणात्मक विश्लेषण।
    - उदाहरण: योगेन्द्र सिंह की पुस्तक ' *भारतीय परंपरा का आधुनिकीकरण' में* सांख्यिकीय प्रवृत्तियों को सांस्कृतिक व्याख्याओं के साथ जोड़ा गया है।
- **प्रासंगिकता** : आरपीएससी प्रश्न अक्सर इस दोहरी प्रकृति का परीक्षण करते हैं, जिसमें अभ्यर्थियों से समाजशास्त्र की वैज्ञानिक स्थिति या व्याख्यात्मक विधियों का मूल्यांकन करने के लिए कहा जाता है।

समाजशास्त्र की प्रकृति की प्रमुख विशेषताएँ

- **अनुभवजन्य और सैद्धांतिक** :
    - समाजशास्त्र अनुभवजन्य आंकड़ों पर आधारित सिद्धांतों को आधार बनाता है, तथा अवलोकन और अमूर्तता के बीच संतुलन स्थापित करता है।
    - उदाहरण: दुर्खीम के एनोमी सिद्धांत का परीक्षण आत्महत्या के आंकड़ों के माध्यम से किया जाता है।
- **वस्तुनिष्ठ और व्यक्तिपरक** :
    - वस्तुनिष्ठता के लिए प्रयास करता है लेकिन सामाजिक क्रिया में व्यक्तिपरक अर्थों को स्वीकार करता है।
    - उदाहरण: जातिगत पदानुक्रम का वस्तुनिष्ठ विश्लेषण बनाम भेदभाव के व्यक्तिपरक अनुभव।
- **सामान्य और विशेष** :
    - विशिष्ट संदर्भों (जैसे, भारतीय जाति) का अध्ययन करते समय सामान्य पैटर्न (जैसे, सामाजिक स्तरीकरण) की तलाश करता है।
    - उदाहरण: राजस्थान की सामंती संरचनाओं पर लागू वर्ग के सार्वभौमिक सिद्धांत।
- **गतिशील और विकासशील** :
    - समाजशास्त्र नई सामाजिक वास्तविकताओं, जैसे डिजिटल समाज और वैश्वीकरण, के अनुकूल ढलता है।
    - उदाहरण: भारतीय युवा संस्कृति पर सोशल मीडिया के प्रभाव का अध्ययन।
- **मानक और विश्लेषणात्मक** :
    - सामाजिक मुद्दों का वस्तुनिष्ठ विश्लेषण करता है, लेकिन अक्सर परिवर्तन की वकालत करता है (जैसे, लैंगिक समानता)।
    - उदाहरण: राजस्थान में दहेज प्रथा की समाजशास्त्रीय आलोचना।

भारतीय समाजशास्त्र की अनूठी प्रकृति

भारतीय समाजशास्त्र की प्रकृति उसके सांस्कृतिक, ऐतिहासिक और औपनिवेशिक संदर्भ से आकार लेती है:

- **इंडोलॉजिकल दृष्टिकोण** :
  - भारत की सांस्कृतिक विरासत (जैसे, धर्मग्रंथ, परंपराएं) पर जोर दिया गया है।
  - उदाहरण: जी.एस.घुर्ये द्वारा जाति का अध्ययन करने के लिए वैदिक ग्रंथों का उपयोग।
- **क्षेत्र-आधारित अनुसंधान** :
  - नृवंशविज्ञान और ग्राम अध्ययन पर निर्भर करता है (उदाहरण के लिए, श्रीनिवास का रामपुरा अध्ययन)।
  - बृज राज चौहान द्वारा राजस्थान के ग्रामीण समुदायों का अध्ययन ।
- **नीति-उन्मुख** :
  - अनुप्रयुक्त अनुसंधान के माध्यम से गरीबी, जाति और लिंग जैसे सामाजिक मुद्दों को संबोधित करता है।
  - उदाहरण: राजस्थान के जनजातीय विकास कार्यक्रमों में समाजशास्त्रीय इनपुट।
- **अंतःविषयक** :
  - समाजशास्त्र को मानवशास्त्र, इतिहास और इंडोलॉजी के साथ मिश्रित करता है।
  - उदाहरण: ए.आर. देसाई का भारतीय राष्ट्रवाद का मार्क्सवादी विश्लेषण।

<u>PYQ विश्लेषण</u>

2015

प्रश्न : "समाजशास्त्र का दायरा क्या है?"

A) व्यक्तिगत व्यवहार का अध्ययन,

B) सामाजिक संबंधों का विश्लेषण,

C) केवल आर्थिक प्रणालियाँ,

D) केवल राजनीतिक संस्थाएँ।

उत्तर : B) सामाजिक संबंधों का विश्लेषण।

व्याख्या : समाजशास्त्र के दायरे में सामाजिक संरचनाएं, संस्थाएं और प्रक्रियाएं शामिल हैं, न कि केवल व्यक्तिगत या पृथक प्रणालियां।

2017

प्रश्न : "समाजशास्त्र के दायरे में कौन सी विधि केंद्रीय है?"

A) प्रायोगिक,

B) तुलनात्मक,

C) साहित्यिक,

D) दार्शनिक.

उत्तर : B) तुलनात्मक.

व्याख्या : तुलनात्मक पद्धति का उपयोग समाजों या समूहों में सामाजिक घटनाओं का अध्ययन करने के लिए व्यापक रूप से किया जाता है।

2019

प्रश्न : "क्या समाजशास्त्र एक विज्ञान है?"

A) हाँ, अनुभवजन्य विधियों के कारण,

B) नहीं, व्यक्तिपरकता के कारण,

C) केवल एक कला,

D) न तो विज्ञान और न ही कला।

उत्तर : A) हाँ, अनुभवजन्य विधियों के कारण।

व्याख्या : समाजशास्त्र व्यवस्थित, अनुभवजन्य विधियों का उपयोग करता है, हालांकि इसमें व्याख्यात्मक तत्व भी शामिल होते हैं।

2021

प्रश्न : "भारतीय समाजशास्त्र का दायरा पश्चिमी समाजशास्त्र से किस प्रकार भिन्न है?"

A) जाति और रिश्तेदारी पर ध्यान केंद्रित करना,

B) व्यक्तिवाद पर जोर,

C) अनुभवजन्य तरीकों की अस्वीकृति,

D) सिद्धांत से बचना.

उत्तर : A) जाति और रिश्तेदारी पर ध्यान केंद्रित करें।

व्याख्या : भारतीय समाजशास्त्र जाति जैसी सांस्कृतिक रूप से विशिष्ट संरचनाओं को प्राथमिकता देता है, जबकि पश्चिमी समाजशास्त्र वर्ग और आधुनिकता पर ध्यान केंद्रित करता है।

2023

प्रश्न : "कौन सा परिप्रेक्ष्य समाजशास्त्र के सैद्धांतिक दायरे का हिस्सा नहीं है?"

A) कार्यात्मकतावाद,

B) संघर्ष सिद्धांत,

C) खगोल भौतिकी,

D) प्रतीकात्मक अंतःक्रियावाद.

उत्तर : C) खगोल भौतिकी।

व्याख्या : खगोल भौतिकी समाजशास्त्र के सैद्धांतिक ढांचे से संबंधित नहीं है।

2024

प्रश्न : "समाजशास्त्र की प्रकृति की एक प्रमुख विशेषता क्या है?"

A) विशुद्ध रूप से व्यक्तिपरक,

B) अनुभवजन्य और सैद्धांतिक,

C) प्राकृतिक नियमों पर ध्यान केंद्रित किया,

D) ऐतिहासिक घटनाओं तक सीमित।

उत्तर : B) अनुभवजन्य और सैद्धांतिक।

व्याख्या : समाजशास्त्र सामाजिक घटनाओं का अध्ययन करने के लिए अनुभवजन्य डेटा को सैद्धांतिक विश्लेषण के साथ जोड़ता है।

केस स्टडी: ग्रामीण राजस्थान का समाजशास्त्र

- **संदर्भ** : राजस्थान का ग्रामीण समाज, जो जातिगत पदानुक्रम, सामंती भूमि संबंधों और जनजातीय समुदायों से युक्त है, भारतीय समाजशास्त्र का प्रमुख केंद्र है।
- **समाजशास्त्रीय विश्लेषण** :
  - **दायरा** :
    - **मूल विषय** : जाति (जैसे, राजपूत प्रभुत्व), परिवार (जैसे, संयुक्त परिवार) और धर्म (जैसे, लोक देवता) का अध्ययन।
    - **पद्धतिगत** : नृवंशविज्ञान (जैसे, उदयपुर में ग्राम अध्ययन) और सर्वेक्षण (जैसे, साक्षरता डेटा) का उपयोग करता है।
    - **सैद्धांतिक** : कार्यात्मकतावाद (जैसे, जाति द्वारा सामाजिक व्यवस्था बनाए रखना) और संघर्ष सिद्धांत (जैसे, भूमि विवाद) को लागू करता है।
    - **अनुप्रयुक्त** : *पंचायती राज* और जनजातीय कल्याण योजनाओं जैसी नीतियों की जानकारी देता है।
  - **प्रकृति** :
    - **वैज्ञानिक** : ग्रामीण गरीबी दर का मात्रात्मक विश्लेषण।
    - **व्याख्यात्मक** : भील सांस्कृतिक प्रथाओं में नृवंशविज्ञान संबंधी अंतर्दृष्टि।
    - **नीति-उन्मुख** : ग्रामीण क्षेत्रों में महिला सशक्तिकरण के लिए सिफारिशें।
- **उदाहरण प्रश्न :** "समाजशास्त्र ग्रामीण राजस्थान का अध्ययन कैसे करता है?"
  - **उत्तर** : समाजशास्त्र अनुभवजन्य और व्याख्यात्मक तरीकों का उपयोग करके जाति, परिवार और आर्थिक संरचनाओं की जांच करता है, और ग्रामीण विकास नीतियों को सूचित करता है।

आलोचनात्मक *विश्लेषण*

- **समाजशास्त्र के दायरे और प्रकृति की ताकतें** :
  - व्यापक दायरा जाति से लेकर डिजिटल समाज तक विविध घटनाओं के विश्लेषण की अनुमति देता है।
  - वैज्ञानिक पद्धतियां कठोरता सुनिश्चित करती हैं, जबकि व्याख्यात्मक दृष्टिकोण सांस्कृतिक बारीकियों को पकड़ते हैं।
  - भारतीय समाजशास्त्र का स्थानीय मुद्दों (जैसे, जाति, जनजाति) पर ध्यान केंद्रित करना वैश्विक समाजशास्त्र को समृद्ध बनाता है।
- **सीमाएँ** :
  - व्यापक दायरे के कारण फोकस में कमी आ सकती है, जिससे सामान्यीकरण कठिन हो सकता है।
  - वैज्ञानिक वस्तुनिष्ठता और व्याख्यात्मक व्यक्तिपरकता के बीच तनाव।
  - भारतीय समाजशास्त्र की पश्चिमी सिद्धांतों पर निर्भरता स्वदेशी ढांचे की अनदेखी कर सकती है।
- **समकालीन प्रासंगिकता** :
  - समाजशास्त्र शहरीकरण, लैंगिक समानता और डिजिटल विभाजन जैसे आधुनिक मुद्दों को संबोधित करता है।
  - भारत में, यह आरक्षण, ग्रामीण विकास और सामाजिक समावेशन पर नीतियों को सूचित करता है।

निष्कर्ष

समाजशास्त्र का दायरा मूलभूत क्षेत्रों (जैसे, जाति, संस्थाएँ), पद्धतिगत उपकरणों (जैसे, सर्वेक्षण, नृवंशविज्ञान), सैद्धांतिक दृष्टिकोणों (जैसे, प्रकार्यवाद, संघर्ष सिद्धांत) और अनुप्रयुक्त आयामों (जैसे, नीति-निर्माण) को समाहित करता है। इसकी प्रकृति वैज्ञानिक कठोरता को व्याख्यात्मक गहराई के साथ जोड़ती है, और अनुभवजन्य विश्लेषण को सांस्कृतिक समझ के साथ संतुलित करती है।

समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण और ज्ञानोदय

परिचय

समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण सैद्धांतिक दृष्टिकोण प्रदान करते हैं जिसके माध्यम से समाजशास्त्री सामाजिक घटनाओं का विश्लेषण करते हैं और समाज की संरचनाओं, प्रक्रियाओं और गतिशीलता को समझने के लिए विविध ढाँचे प्रस्तुत करते हैं। 18वीं शताब्दी के एक बौद्धिक आंदोलन, ज्ञानोदय ने तर्क, विज्ञान और प्रगति को बढ़ावा देकर समाजशास्त्र की दार्शनिक नींव रखी और एक विषय के रूप में इसके उद्भव को आकार दिया।

समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण और ज्ञानोदय

समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण

समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण सैद्धांतिक ढाँचे हैं जो सामाजिक घटनाओं के अध्ययन का मार्गदर्शन करते हैं, और ये दृष्टिकोण समाज के विभिन्न पहलुओं पर ज़ोर देते हैं, एकीकरण से लेकर संघर्ष और व्यक्तिगत अंतःक्रियाओं तक। ये दृष्टिकोण आरपीएससी परीक्षा के लिए महत्वपूर्ण हैं, क्योंकि अक्सर इनसे ऐसे प्रश्न पूछे जाते हैं जिनमें उम्मीदवारों से भारतीय सामाजिक मुद्दों पर सिद्धांतों को लागू करने या उनकी मान्यताओं की तुलना करने के लिए कहा जाता है।

1. कार्यात्मक दृष्टिकोण

- **परिभाषा** : कार्यात्मकतावाद समाज को परस्पर जुड़े भागों की एक प्रणाली के रूप में देखता है, जहां संस्थाएं और संरचनाएं स्थिरता और संतुलन बनाए रखने के लिए एक साथ काम करती हैं।
- **महत्वपूर्ण अवधारणाएं** :
  - **सामाजिक एकीकरण** : संस्थाएं (जैसे, परिवार, धर्म) एकजुटता को बढ़ावा देती हैं।
  - **कार्य** : सामाजिक संरचनाओं की प्रकट (इच्छित) और अव्यक्त (अनपेक्षित) भूमिकाएँ।
  - **संतुलन** : व्यवधानों के बाद संतुलन बहाल करने के लिए समाज स्वयं को नियंत्रित करता है।
- **प्रमुख प्रस्तावक** :
  - **एमिल दुर्खीम** : सामाजिक तथ्यों और सामूहिक विवेक पर जोर दिया।
  - **टैल्कॉट पार्सन्स** : एजीआईएल मॉडल (अनुकूलन, लक्ष्य प्राप्ति, एकीकरण, विलंबता) विकसित किया।
  - **रॉबर्ट मर्टन** : प्रकट/अव्यक्त कार्यों और शिथिलताओं का परिचय दिया।
- **भारत पर लागू** :
  - **जाति व्यवस्था** : कार्यात्मकतावादी जाति को भूमिकाएं सौंपकर समाज को एकीकृत करने के रूप में देखते हैं (जैसे, व्यावसायिक विशेषज्ञता)।
  - **परिवार** : ग्रामीण भारत में संयुक्त परिवार सामंजस्य और सहयोग को बढ़ावा देते हैं।
  - **उदाहरण** : राजस्थान में, जाति-आधारित व्यवसाय (जैसे, जाटों का किसान के रूप में होना) सामाजिक व्यवस्था को बनाए रखते हैं, हालांकि जातिगत कठोरता जैसी विकृतियां बनी रहती हैं।
- **ताकत** :
  - समाज की स्थिरता और परस्पर निर्भरता पर प्रकाश डालता है।
  - जाति और धर्म जैसी पारंपरिक संस्थाओं का विश्लेषण करने के लिए उपयोगी।
- **आलोचनाएँ** :
  - स्थिरता पर अत्यधिक जोर दिया जाता है, संघर्ष और परिवर्तन की उपेक्षा की जाती है।
  - असमानताओं (जैसे, जाति उत्पीड़न) की अनदेखी करता है।
- **परीक्षा प्रासंगिकता** : प्रश्नों में अक्सर अभ्यर्थियों से भारतीय संस्थानों में कार्यात्मकता को लागू करने या इसकी सीमाओं की पहचान करने के लिए कहा जाता है।

2. संघर्ष परिप्रेक्ष्य

- **परिभाषा** : संघर्ष सिद्धांत समाज को दुर्लभ संसाधनों के लिए प्रतिस्पर्धा करने वाले समूहों के बीच शक्ति संघर्ष के स्थल के रूप में देखता है, तथा असमानता और परिवर्तन पर जोर देता है।
- **महत्वपूर्ण अवधारणाएं** :
  - **शक्ति और असमानता** : प्रमुख समूह अधीनस्थों (जैसे, वर्ग, जाति) का शोषण करते हैं।
  - **परिवर्तन के रूप में संघर्ष** : संघर्ष सामाजिक परिवर्तन को प्रेरित करते हैं।
  - **विचारधारा** : प्रमुख समूह नियंत्रण बनाए रखने के लिए विचारों का उपयोग करते हैं।
- **प्रमुख प्रस्तावक** :
  - **कार्ल मार्क्स** : वर्ग संघर्ष और पूंजीवादी शोषण पर ध्यान केंद्रित किया।
  - **राल्फ डाहरेंडोर्फ** : गैर-आर्थिक शक्ति (जैसे, प्राधिकरण) तक विस्तारित संघर्ष।
  - **सी. राइट मिल्स** : आधुनिक समाजों में शक्ति अभिजात वर्ग का विश्लेषण।

- **भारत पर लागू** :
  - **जाति और वर्ग** : संघर्ष सिद्धांतकार जाति को उच्च जाति के वर्चस्व (जैसे, ब्राह्मण आधिपत्य) के एक उपकरण के रूप में देखते हैं।
  - **भूमि संबंध** : ग्रामीण राजस्थान में जमींदारों और किसानों के बीच सामंती संघर्ष।
  - **उदाहरण** : भारत में दलित आंदोलन जाति उत्पीड़न को चुनौती देते हैं, तथा संघर्ष-प्रेरित परिवर्तन को दर्शाते हैं।
- **ताकत** :
  - असमानताओं और शक्ति गतिशीलता पर प्रकाश डाला गया।
  - सामाजिक परिवर्तन (जैसे, जातिगत गतिशीलता) की व्याख्या करता है।
- **आलोचनाएँ** :
  - संघर्ष पर अत्यधिक बल देता है, सहयोग की उपेक्षा करता है।
  - जटिल सामाजिक घटनाओं को अति सरलीकृत किया जा सकता है।
- **परीक्षा प्रासंगिकता** : प्रश्न भारतीय असमानताओं (जैसे, जाति, लिंग) और इसकी मार्क्सवादी जड़ों पर संघर्ष सिद्धांत के अनुप्रयोग का परीक्षण करते हैं।

3. प्रतीकात्मक अंतःक्रियावादी परिप्रेक्ष्य

- **परिभाषा** : प्रतीकात्मक अंतःक्रियावाद सूक्ष्म-स्तरीय अंतःक्रियाओं पर केंद्रित है, जहां व्यक्ति प्रतीकों के माध्यम से अर्थों का सृजन और व्याख्या करते हैं।
- **महत्वपूर्ण अवधारणाएं** :
  - **प्रतीक** : साझा अर्थ वाली वस्तुएं या क्रियाएं (जैसे, भाषा, हावभाव)।
  - **अंतःक्रिया** : सामाजिक वास्तविकता बातचीत से तय अर्थों से उभरती है।
  - **स्व** : व्यक्ति अंतःक्रियाओं के माध्यम से पहचान विकसित करते हैं (उदाहरण के लिए, कूली का "लुकिंग-ग्लास सेल्फ")।
- **प्रमुख प्रस्तावक** :
  - **जॉर्ज हर्बर्ट मीड** : "सामान्यीकृत अन्य" की अवधारणा विकसित की।
  - **हर्बर्ट ब्लूमर** : तीन सिद्धांतों (अर्थ, अंतःक्रिया, व्याख्या) को रेखांकित किया।
  - **एर्विंग गोफमैन** : नाट्यशास्त्रीय विश्लेषण प्रस्तुत किया (उदाहरण के लिए, "फ्रंट स्टेज" बनाम "बैक स्टेज")।
- **भारत पर लागू** :
  - **जातिगत अंतःक्रियाएँ** : जाति के प्रतीकात्मक अर्थ (जैसे, शुद्धता-प्रदूषण) सामाजिक व्यवहार को आकार देते हैं।
  - **लिंग भूमिकाएं** : विवाह अनुष्ठानों में बातचीत से तय अर्थ (जैसे, हैसियत के प्रतीक के रूप में दहेज)।
  - **उदाहरण** : राजस्थान में, आदिवासी त्योहारों में प्रतीकात्मक अनुष्ठान (जैसे, भील नृत्य) शामिल होते हैं जो सामुदायिक पहचान को मजबूत करते हैं।
- **ताकत** :
  - सूक्ष्म-स्तरीय गतिशीलता और व्यक्तिगत एजेंसी को कैप्चर करता है।
  - सांस्कृतिक प्रथाओं और पहचानों के अध्ययन के लिए उपयोगी।
- **आलोचनाएँ** :
  - वृहद स्तर की संरचनाओं (जैसे, जाति व्यवस्था) की उपेक्षा करता है।
  - व्यक्तिपरक अर्थों पर अत्यधिक बल देता है, सामान्यीकरण को सीमित करता है।
- **परीक्षा प्रासंगिकता** : प्रश्न प्रतीकात्मक अंतःक्रियावाद के सूक्ष्म स्तर पर ध्यान और भारतीय सांस्कृतिक प्रथाओं पर इसके अनुप्रयोग पर केंद्रित हैं।

4. नारीवादी परिप्रेक्ष्य

- **परिभाषा** : नारीवादी समाजशास्त्र पितृसत्तात्मक संरचनाओं और महिलाओं के अनुभवों पर ध्यान केंद्रित करते हुए लैंगिक असमानताओं की जांच करता है।
- **महत्वपूर्ण अवधारणाएं** :
  - **पितृसत्ता** : महिलाओं पर अत्याचार करने वाली पुरुष-प्रधान व्यवस्था।
  - **अंतर्विभाजकता** : अतिव्यापी असमानताएँ (जैसे, लिंग, जाति, वर्ग)।
  - **एजेंसी** : पितृसत्तात्मक मानदंडों के प्रति महिलाओं का प्रतिरोध।
- **प्रमुख प्रस्तावक** :
  - **सिमोन डी बोउवार** : पितृसत्तात्मक समाजों में महिलाओं को "अन्य" के रूप में विश्लेषित किया।
  - **लीला दुबे** : रिश्तेदारी और परिवार में भारतीय महिलाओं की भूमिका का अध्ययन किया।
  - **पेट्रीसिया हिल कोलिन्स** : अन्तर्विभाजकता सिद्धांत विकसित किया।

- **भारत पर लागू** :
  - **लैंगिक असमानता** : राजस्थान में दहेज और कन्या भ्रूण हत्या जैसी प्रथाएँ।
  - **अंतर्विभागीयता** : दलित महिलाओं को जातिगत और लैंगिक उत्पीड़न का सामना करना पड़ता है।
  - **उदाहरण** : ग्रामीण भारत में महिला स्वयं सहायता समूह (एसएचजी) पितृसत्ता को चुनौती देते हुए महिलाओं को सशक्त बनाते हैं।
- **ताकत** :
  - लिंग को एक केन्द्रीय सामाजिक मुद्दे के रूप में रेखांकित करता है।
  - अन्तर्विभाजक असमानताओं को संबोधित करता है।
- **आलोचनाएँ** :
  - लिंग पर अत्यधिक जोर दिया जा सकता है, तथा अन्य कारकों (जैसे, वर्ग) की उपेक्षा की जा सकती है।
  - महिलाओं के अनुभवों को अनिवार्य बनाने का जोखिम .
- **परीक्षा प्रासंगिकता** : प्रश्न भारतीय लैंगिक मुद्दों पर नारीवादी समाजशास्त्र के अनुप्रयोग और पितृसत्ता की आलोचना का परीक्षण करते हैं।

5. उत्तर-आधुनिक परिप्रेक्ष्य

- **परिभाषा** : उत्तर आधुनिकतावाद भव्य आख्यानों पर प्रश्न उठाता है, तथा आधुनिक समाजों में विविधता, विखंडन और पहचान की तरलता पर बल देता है।
- **महत्वपूर्ण अवधारणाएं** :
  - **विखंडन** : सार्वभौमिक सत्यों को चुनौती देना।
  - **अतिवास्तविकता** : वास्तविकता और मीडिया प्रतिनिधित्व का धुंधला होना।
  - **पहचान की राजनीति** : विविध, तरल पहचानों पर ध्यान केंद्रित करना।
- **प्रमुख प्रस्तावक** :
  - **जीन बौद्रिलार्ड** : हाइपररियलिटी और उपभोक्ता संस्कृति का विश्लेषण किया।
  - **मिशेल फूको** : शक्ति-ज्ञान और प्रवचन की जांच की।
  - **ज़िग्मंट बाउमन** : तरल आधुनिकता और तरल पहचान का अध्ययन किया।
- **भारत पर लागू** :
  - **डिजिटल समाज** : सोशल मीडिया शहरी भारत में युवाओं की परिवर्तनशील पहचान को आकार देता है।
  - **वैश्वीकरण** : पारंपरिक जाति और पारिवारिक संरचनाओं को चुनौती देता है।
  - **उदाहरण** : राजस्थान में बॉलीवुड का प्रभाव अतियथार्थवादी सांस्कृतिक आख्यानों का निर्माण करता है, जिसमें परंपरा और आधुनिकता का सम्मिश्रण होता है।
- **ताकत** :
  - समकालीन सामाजिक जटिलता को दर्शाता है।
  - हाशिये पर पड़ी आवाज़ों और विविधता पर प्रकाश डाला गया।
- **आलोचनाएँ** :
  - इसमें सुसंगतता का अभाव है, जिससे इसे व्यवस्थित रूप से लागू करना कठिन हो जाता है।
  - संरचनात्मक विश्लेषण (जैसे, जाति) को कमजोर कर सकता है।
- **परीक्षा प्रासंगिकता** : प्रश्न भारत में वैश्वीकरण और डिजिटल समाजों के लिए उत्तर आधुनिकतावाद की प्रासंगिकता पर केंद्रित हैं।

ज्ञानोदय और समाजशास्त्र

ज्ञानोदय (17वीं-18वीं शताब्दी) एक दार्शनिक आंदोलन था जिसने तर्क, विज्ञान और मानव प्रगति पर ज़ोर दिया और समाजशास्त्र के एक विषय के रूप में उद्भव को गहराई से प्रभावित किया। इसके सिद्धांतों ने समाजशास्त्रीय चिंतन, विधियों और उद्देश्यों को, विशेष रूप से सामाजिक व्यवस्था और परिवर्तन के अध्ययन में, आकार दिया।

प्रमुख ज्ञानोदय सिद्धांत

- **तर्कसंगतता** :
  - ज्ञानोदय विचारकों (जैसे, वोल्टेयर, रूसो) ने परंपरा की तुलना में तर्क की वकालत की, जिससे समाजशास्त्र के विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण को प्रेरणा मिली।
  - **समाजशास्त्र पर प्रभाव** : ऑगस्ट कॉम्टे के प्रत्यक्षवाद ने समाज का अध्ययन करने के लिए तर्कसंगत, वैज्ञानिक तरीकों को लागू करने का प्रयास किया।
  - **भारतीय संदर्भ** : ज्ञानोदय के विचारों ने राजा राम मोहन राय जैसे भारतीय समाज सुधारकों को प्रभावित किया, जिन्होंने जाति और सती प्रथा को चुनौती दी।

- **अनुभववाद** :
  - अवलोकन और साक्ष्य पर जोर ने समाजशास्त्र की अनुभवजन्य पद्धतियों को आकार दिया।
  - **समाजशास्त्र पर प्रभाव** : दुर्खीम द्वारा सांख्यिकीय आंकड़ों (जैसे, आत्महत्या अध्ययन) का उपयोग अनुभवजन्य कठोरता को दर्शाता है।
  - **भारतीय संदर्भ** : औपनिवेशिक नृवंशविज्ञान (जैसे, *भारत की जनगणना*) ने भारतीय समाज का अध्ययन करने के लिए अनुभवजन्य तरीकों का इस्तेमाल किया।
- **प्रगति** :
  - मानव सुधार में विश्वास ने समाजशास्त्र का ध्यान सामाजिक सुधार और परिवर्तन पर केन्द्रित किया।
  - **समाजशास्त्र पर प्रभाव** : कॉम्टे के तीन-चरण सिद्धांत (धर्मशास्त्रीय, आध्यात्मिक, सकारात्मक) ने सामाजिक प्रगति की कल्पना की।
  - **भारतीय संदर्भ** : भारत में समाजशास्त्र आधुनिकीकरण का अध्ययन करता है (उदाहरण के लिए, योगेन्द्र सिंह का परंपरा बनाम आधुनिकता पर कार्य)।
- **प्राधिकरण की आलोचना** :
  - ज्ञानोदय ने सामंती और धार्मिक सत्ता को चुनौती दी, जिससे समाजशास्त्र का आलोचनात्मक रुख प्रभावित हुआ।
  - **समाजशास्त्र पर प्रभाव** : वेबर का युक्तिकरण और नौकरशाही का विश्लेषण इस आलोचना को दर्शाता है।
  - **भारतीय संदर्भ** : समाजशास्त्र भारत में जाति और पितृसत्तात्मक सत्ता की आलोचना करता है।

समाजशास्त्र के उद्भव में ज्ञानोदय की भूमिका

- **वैज्ञानिक आधार** :
  - कॉम्टे के प्रत्यक्षवाद ने समाजशास्त्र को सामाजिक नियमों की खोज करने वाले विज्ञान के रूप में स्थापित किया, जो ज्ञानोदय की तर्कसंगतता से प्रेरित था।
  - उदाहरण: दुर्खीम के सामाजिक एकजुटता के अध्ययन में सामाजिक सामंजस्य को समझाने के लिए वैज्ञानिक तरीकों का उपयोग किया गया।
- **सामाजिक व्यवस्था पर ध्यान केंद्रित करें** :
  - सामंतवाद के बाद सामाजिक स्थिरता के बारे में ज्ञानोदय की चिंताओं ने समाजशास्त्र के व्यवस्था और परिवर्तन के अध्ययन को आकार दिया।
  - उदाहरण: पार्सन्स का संतुलन का कार्यात्मक सिद्धांत सामाजिक सद्भाव के बारे में ज्ञानोदय के आशावाद को दर्शाता है।
- **सामाजिक सुधार** :
  - समानता और न्याय के ज्ञानोदय आदर्शों ने समाजशास्त्र के व्यावहारिक फोकस को प्रेरित किया।
  - उदाहरण: जाति और लैंगिक असमानताओं को दूर करने में भारतीय समाजशास्त्र की भूमिका।
- **भारतीय समाजशास्त्र** :
  - ज्ञानोदय युग के दौरान औपनिवेशिक मुठभेड़ों ने भारतीय समाज के प्रारंभिक समाजशास्त्रीय अध्ययनों को प्रेरित किया (उदाहरण के लिए, ब्रिटिश प्रशासकों के जाति सर्वेक्षण)।
  - जी.एस.घुर्ये जैसे भारतीय समाजशास्त्रियों ने जाति और धर्म का अध्ययन करने के लिए ज्ञानोदय से प्रेरित तरीकों का प्रयोग किया।

PYQ विश्लेषण

आरपीएससी सहायक प्रोफेसर समाजशास्त्र परीक्षा (2015-2024) और इसी तरह की परीक्षाओं (जैसे, यूजीसी नेट समाजशास्त्र) के रुझानों के आधार पर:

2016

प्रश्न : "कौन सा दृष्टिकोण समाज को परस्पर जुड़े भागों की प्रणाली के रूप में देखता है?"

A) विवाद, B) कार्यात्मकवादी,
C) प्रतीकात्मक अंतःक्रियावादी, D) उत्तरआधुनिक.

उत्तर : B) कार्यात्मकवादी।

व्याख्या : कार्यात्मकतावाद सामाजिक एकीकरण और संतुलन पर जोर देता है।

2018

प्रश्न : "वर्स्टेहेन की अवधारणा किसने विकसित की?"

A) दुर्खीम, B) वेबर,
C) मार्क्स, D) पार्सन्स.

उत्तर : B) वेबर.

व्याख्या : वेबर का व्याख्यात्मक दृष्टिकोण प्रतीकात्मक अंतःक्रियावाद को रेखांकित करता है।

2020

प्रश्न : "संघर्ष सिद्धांत भारत में जाति की व्याख्या कैसे करता है?"

A) सामाजिक सद्भाव को बढ़ावा देता है,

B) सत्ता संघर्ष को दर्शाता है,

C) सूक्ष्म-अंतःक्रियाओं पर ध्यान केंद्रित करता है,

D) सांस्कृतिक प्रतीकों पर जोर देता है।

उत्तर : B) सत्ता संघर्ष को दर्शाता है।

व्याख्या : संघर्ष सिद्धांत जाति को उच्च जाति के वर्चस्व की प्रणाली के रूप में देखता है।

2022

प्रश्न : "समाजशास्त्र पर ज्ञानोदय का क्या प्रभाव था?"

A) परंपरा को बढ़ावा दिया,

B) अनुभवजन्य जांच पर जोर दिया,

C) सामाजिक परिवर्तन को अस्वीकार कर दिया,

D) धर्म पर केन्द्रित.

उत्तर : B) अनुभवजन्य जांच पर जोर दिया।

व्याख्या : ज्ञानोदय के कारण और विज्ञान पर ध्यान ने समाजशास्त्र के तरीकों को आकार दिया।

2024

प्रश्न : "भारत में लैंगिक असमानताओं के लिए कौन सा परिप्रेक्ष्य सबसे अधिक प्रासंगिक है?"

A) कार्यात्मकवादी,

B) संघर्ष,

C) नारीवादी,

D) उत्तरआधुनिक.

उत्तर : C) नारीवादी।

व्याख्या : नारीवादी समाजशास्त्र सीधे तौर पर पितृसत्ता और लैंगिक उत्पीड़न को संबोधित करता है।

दृश्य सहायता

तालिका 1: प्रमुख समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य और उनके अनुप्रयोग

परिप्रेक्ष्य	मुख्य फोकस	प्रमुख प्रस्तावक	भारतीय उदाहरण	ताकत	आलोचनाओं
कार्यानुरूप	सामाजिक एकीकरण, संतुलन	दुर्खीम, पार्सन्स, मर्टन	व्यावसायिक विशेषज्ञता के रूप में जाति	स्थिरता पर प्रकाश डाला गया	संघर्ष, असमानता की उपेक्षा
टकराव	सत्ता संघर्ष, असमानता	मार्क्स, डाहरेनडॉर्फ , मिल्स	जातिगत उत्पीड़न के विरुद्ध दलित आंदोलन	परिवर्तन, असमानता की व्याख्या करता है	संघर्ष पर अत्यधिक जोर देता है
प्रतीकात्मक अंतःक्रियावादी	सूक्ष्म-स्तरीय अर्थ, अंतःक्रियाएँ	मीड, ब्लूमर , गोफमैन	आदिवासी अनुष्ठानों में प्रतीकात्मक अर्थ	व्यक्तिगत एजेंसी को कैप्चर करता है	मैक्रो-संरचनाओं को अनदेखा करता है
नारीवादी	लैंगिक असमानताएँ, पितृसत्ता	ब्यूवोइर, ड्यूब , कोलिन्स	दहेज प्रथा को चुनौती दे रहे महिला स्वयं सहायता समूह	लैंगिक मुद्दों को संबोधित करता है	अन्य असमानताओं की उपेक्षा हो सकती है
पोस्टमॉडर्न	विविधता, तरल पहचान	बॉडरिलार्ड , फौकॉल्ट	सोशल मीडिया युवाओं की पहचान को आकार दे रहा है	आधुनिक जटिलता को दर्शाता है	व्यवस्थित ढांचे का अभाव

विवरण : पांच प्रमुख समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्यों का सारांश, उनके फोकस, प्रस्तावक, भारतीय अनुप्रयोग, ताकत और आलोचनाओं सहित।

रेंडरिंग निर्देश : मार्कडाउन या कैनवा का उपयोग करें । पंक्तियों को रंग-कोडित करें (उदाहरण के लिए, कार्यात्मकता के लिए नीला, संघर्ष के लिए लाल)। एक शीर्षक शामिल करें: "सारणी 1: समाजशास्त्रीय दृष्टिकोणों का तुलनात्मक अवलोकन।"

केस स्टडी: राजस्थान में जाति पर परिप्रेक्ष्य लागू करना

- **संदर्भ** : जाति राजस्थान की सामाजिक संरचना की एक परिभाषित विशेषता बनी हुई है, जो राजनीति, विवाह और अर्थशास्त्र को प्रभावित करती है।

- **परिप्रेक्ष्य द्वारा विश्लेषण** :
    - **प्रकार्यवादी** : जाति भूमिकाएं सौंपकर समाज को एकीकृत करती है (उदाहरण के लिए, राजपूतों को नेता, जाटों को किसान), लेकिन अस्पृश्यता जैसी विकृतियां तनाव पैदा करती हैं।
    - **संघर्ष** : जाति सत्ता संघर्ष को प्रतिबिम्बित करती है, जिसमें उच्च जातियां (जैसे, राजपूत) भूमि और राजनीति में निम्न जातियों (जैसे, दलित) पर हावी होती हैं।
    - **प्रतीकात्मक अंतःक्रियावादी** : जाति प्रतीकों के माध्यम से अंतःक्रियाओं को आकार देती है (उदाहरण के लिए, विवाह अनुष्ठानों में शुद्धता-प्रदूषण मानदंड)।
    - **नारीवादी** : दलित महिलाओं को जाति और लिंग भेदभाव के साथ-साथ अंतर्विरोधात्मक उत्पीड़न का सामना करना पड़ता है।
    - **उत्तरआधुनिक** : वैश्वीकरण और मीडिया पारंपरिक जातिगत पहचान को चुनौती देते हैं, तथा परिवर्तनशील सामाजिक भूमिकाएं निर्मित करते हैं।
- **प्रासंगिकता** : यह केस स्टडी दर्शाती है कि किस प्रकार दृष्टिकोण जाति, जो कि आरपीएससी परीक्षा का एक प्रमुख विषय है, के विश्लेषण के लिए विविध दृष्टिकोण प्रस्तुत करते हैं।
- **उदाहरण प्रश्न :** "कार्यात्मकता राजस्थान में जाति की व्याख्या कैसे करती है?"
    - **उत्तर** : कार्यात्मकतावाद जाति को भूमिका विशेषज्ञता के माध्यम से सामाजिक एकीकरण को बढ़ावा देने के रूप में देखता है, हालांकि यह असमानताओं को नजरअंदाज कर सकता है।

***आलोचनात्मक* विश्लेषण**

- **समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण की ताकतें** :
    - जटिल सामाजिक मुद्दों का विश्लेषण करने के लिए विविध रूपरेखाएँ प्रदान करें।
    - जाति, लिंग और वैश्वीकरण जैसे भारतीय संदर्भों पर लागू।
    - विभिन्न आयामों (जैसे, स्थिरता बनाम संघर्ष) पर प्रकाश डालकर आलोचनात्मक सोच को प्रोत्साहित करें।
- **सीमाएँ** :
    - परिप्रेक्ष्यों में टकराव हो सकता है, जिससे एकीकृत विश्लेषण जटिल हो सकता है (उदाहरण के लिए, कार्यात्मकता बनाम संघर्ष)।
    - कुछ दृष्टिकोणों (जैसे, उत्तर-आधुनिकतावाद) में अनुभवजन्य आधार का अभाव है।
    - सिद्धांतों में पश्चिमी पूर्वाग्रह भारतीय वास्तविकताओं (जैसे, जाति बनाम वर्ग) को पूरी तरह से नहीं पकड़ पाते हैं।
- **समकालीन प्रासंगिकता** :
    - परिप्रेक्ष्य डिजिटल संस्कृति (उत्तर आधुनिकतावाद), लैंगिक समानता (नारीवाद) और सामाजिक आंदोलनों (संघर्ष) जैसे आधुनिक मुद्दों को संबोधित करते हैं।
    - भारत में, वे आरक्षण, महिला सशक्तिकरण और जनजातीय एकीकरण पर नीतियों को सूचित करते हैं।

निष्कर्ष

इस अध्याय में समाजशास्त्रीय दृष्टिकोणों और समाजशास्त्र को आकार देने में ज्ञानोदय की भूमिका का व्यापक रूप से अन्वेषण किया गया है। प्रकार्यवाद, संघर्ष सिद्धांत, प्रतीकात्मक अंतःक्रियावाद, नारीवाद और उत्तर-आधुनिकतावाद, भारत में जातिगत पदानुक्रम से लेकर डिजिटल पहचान तक, सामाजिक परिघटनाओं के विश्लेषण के लिए विविध दृष्टिकोण प्रदान करते हैं। ज्ञानोदय के तर्क, अनुभववाद और प्रगति पर ज़ोर ने समाजशास्त्र के वैज्ञानिक और सुधारवादी अभिविन्यास की नींव रखी।

समाज की अवधारणा: परिभाषाएँ और विशेषताएँ

परिचय

समाज की अवधारणा समाजशास्त्र का आधार है, जो सामाजिक संबंधों, संस्थाओं और अंतःक्रियाओं के जटिल जाल का प्रतिनिधित्व करती है जो मानव जीवन को आकार देते हैं। समाज के अर्थ, परिभाषाओं और विशेषताओं को समझना महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह विविध संदर्भों, विशेष रूप से भारत के बहुलवादी सामाजिक ताने-बाने में सामाजिक संरचनाओं, प्रक्रियाओं और गतिशीलता के विश्लेषण के लिए एक रूपरेखा प्रदान करता है।

समाज की अवधारणा: परिभाषाएँ और विशेषताएँ

समाज का अर्थ

समाज व्यक्तियों के एक समूह को कहते हैं जो एक समान भूभाग, संस्कृति और सामाजिक संबंधों को साझा करते हैं, और सामूहिक जीवन को बनाए रखने के लिए संस्थाओं और मानदंडों के माध्यम से संगठित होते हैं। यह परस्पर निर्भर भागों—व्यक्तियों, समूहों और संस्थाओं—की एक गतिशील व्यवस्था है जो सामाजिक व्यवस्था बनाए रखने और परिवर्तन को सुगम बनाने के लिए परस्पर क्रिया करती है। व्यक्तियों के एक मात्र समूह के विपरीत, समाज की विशेषता संरचित संबंध, साझा मूल्य और पारस्परिक निर्भरता है, जो इसे समुदाय या संघ जैसी अवधारणाओं से अलग करती है।

- **प्रमुख विशेषताऐं** :
  - **सामाजिक संबंध** : समाज का निर्माण रिश्तेदारी संबंधों से लेकर आर्थिक आदान-प्रदान तक के संबंधों पर आधारित होता है।
  - **साझा संस्कृति** : सामान्य मानदंड, मूल्य और विश्वास सदस्यों को एकजुट करते हैं।
  - **संगठन** : संस्थाएँ (जैसे, परिवार, सरकार) सामाजिक जीवन की संरचना करती हैं।
  - **गतिशील प्रकृति** : समाज आधुनिकीकरण और वैश्वीकरण जैसी प्रक्रियाओं के माध्यम से विकसित होता है।
- **भारतीय संदर्भ** : भारत में, समाज में विविध सामाजिक संरचनाएं शामिल हैं, जिनमें जातिगत पदानुक्रम, जनजातीय समुदाय और धार्मिक बहुलवाद शामिल हैं, जो अनोखे तरीकों से अंतःक्रियाओं को आकार देते हैं।
- **उदाहरण** : राजस्थान का समाज जाति-आधारित व्यवसायों (जैसे, जाट किसान) और जनजातीय परंपराओं (जैसे, भील त्योहार) को एकीकृत करता है, जो एकता और विविधता दोनों को दर्शाता है।

समाज की परिभाषाएँ

समाजशास्त्रियों ने समाज को विभिन्न तरीकों से परिभाषित किया है, जो इसकी जटिलता और सैद्धांतिक दृष्टिकोण को दर्शाते हैं। ये परिभाषाएँ आरपीएससी परीक्षा के प्रश्नों के लिए महत्वपूर्ण हैं, जिनमें अक्सर उम्मीदवारों की उन्हें याद करने और लागू करने की क्षमता का परीक्षण किया जाता है।

- **अगस्टे कॉम्टे** :
  - "समाज एक सामूहिक जीव है, सामाजिक कानूनों द्वारा शासित व्यक्तियों के बीच सहयोग की एक प्रणाली है।"
  - **संदर्भ** : कॉम्टे ने समाज को एक एकीकृत इकाई के रूप में देखा, जो जैविक जीव के समान था, तथा व्यवस्था और प्रगति पर जोर दिया।
  - **प्रासंगिकता** : समाज की प्रणालीगत प्रकृति पर प्रकाश डालता है, कार्यात्मक दृष्टिकोण पर प्रश्नों के लिए प्रासंगिक है।
- **एमाइल दुर्खीम** :
  - "समाज एक अद्वितीय वास्तविकता है, एक सामूहिक चेतना जो अपने व्यक्तिगत सदस्यों के योग से परे विद्यमान है।"
  - **संदर्भ** : दुर्खीम ने सामाजिक तथ्यों - मानदंडों और मूल्यों - पर जोर दिया, जो व्यक्तिगत व्यवहार को आकार देते हैं।
  - **प्रासंगिकता** : समाज की सामूहिक प्रकृति और सामाजिक एकजुटता पर प्रश्नों के लिए कुंजी।
- **मैक्स वेबर** :
  - "समाज सामाजिक क्रियाओं का एक नेटवर्क है, जहाँ व्यक्ति व्यक्तिपरक अर्थों के आधार पर परस्पर क्रिया करते हैं।"
  - **संदर्भ** : वेबर ने सामाजिक अंतःक्रियाओं की व्याख्यात्मक समझ पर ध्यान केंद्रित किया।
  - **प्रासंगिकता** : प्रतीकात्मक अंतःक्रियावाद और सूक्ष्म-स्तरीय गतिशीलता पर प्रश्नों के लिए उपयोगी।
- **टैल्कॉट पार्सन्स** :
  - "समाज परस्पर संबंधित भूमिकाओं और संस्थाओं की एक सामाजिक व्यवस्था है जो कार्यात्मक आवश्यकताओं को पूरा करती है।"
  - **संदर्भ** : पार्सन्स का कार्यात्मक दृष्टिकोण समाज को संस्थाओं के माध्यम से संतुलन बनाए रखने वाला मानता है।
  - **प्रासंगिकता** : कार्यात्मकता और सामाजिक एकीकरण पर प्रश्नों का केंद्र।
- **जी.एस.घुर्ये (भारतीय परिप्रेक्ष्य)** :
  - "भारत में समाज जाति, रिश्तेदारी और धार्मिक संबंधों का एक जटिल स्वरूप है, जो सांस्कृतिक परंपराओं में निहित है।"
  - **संदर्भ** : घुर्ये ने भारत की अनूठी सामाजिक संरचना पर जोर दिया, तथा समाजशास्त्र को भारतविद्या के साथ मिश्रित किया।
  - **प्रासंगिकता** : भारतीय समाज की विशिष्ट विशेषताओं, विशेषकर जाति से संबंधित प्रश्नों के लिए महत्वपूर्ण।

समाज की विशेषताएँ

समाज की पहचान कुछ विशेषताओं के समूह से होती है जो उसकी संरचना, कार्य और गतिशीलता को परिभाषित करते हैं। आरपीएससी उम्मीदवारों के लिए इन विशेषताओं को समझना आवश्यक है, क्योंकि ये विशेषताएँ समाज की प्रकृति और उसकी भारतीय अभिव्यक्तियों पर वस्तुनिष्ठ प्रश्नों का आधार बनती हैं।

- **व्यक्तियों की बहुलता** :
  - समाज में अनेक व्यक्ति होते हैं जो एक साझा ढांचे के अंतर्गत परस्पर क्रिया करते हैं।
  - **भारतीय संदर्भ** : भारत की 1.4 अरब की आबादी एक विविध समाज का निर्माण करती है, जिसमें जातियां, जनजातियां और धर्म शामिल हैं।
  - **उदाहरण** : राजस्थान के समाज में राजपूत , जाट , भील और शहरी प्रवासी शामिल हैं, जो सामाजिक मानदंडों के माध्यम से परस्पर क्रिया करते हैं।
  - **परीक्षा का दृष्टिकोण** : प्रश्न में पूछा जा सकता है कि बहुलता सामाजिक विविधता को किस प्रकार आकार देती है।
- **सामाजिक संबंध** :
  - समाज को रिश्तों के नेटवर्क द्वारा परिभाषित किया जाता है, जिसमें रिश्तेदारी, आर्थिक और राजनीतिक संबंध शामिल हैं।